आईआईएम • टेडएक्स रांची के आठवें एडिशन में केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी शामिल हुईं, कहा-

टैलेंट, पैशन या प्रोफेशन किसी जेंडर पर निर्भर नहीं करता, कोई भी कड़ी मेहनत करके अपने टैलेंट से गहरी छाप छोड़ सकता है

सिटी रिपोर्टर. रांची

टैलेंट, पैशन या प्रोफेशन जेंडर पर निर्भर नहीं करता। कोई भी व्यक्ति कड़ी मेहनत करते हुए अपने टैलेंट से गहरी छाप छोड़ सकता है। ये बातें केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा। मौका था आईआईएम रांची के नए कैंपस में आयोजित टेडएक्स के आठवें संस्करण का। इसमें वे ऑनलाइन माध्यम से इस कार्यक्रम में जुड़ीं और स्टूडेंट्स के साथ इंट्रैक्शन भी किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने वाले एक्सपर्ट स्पीकर के रूप में मौजूद रहे। इनमें इंडियन क्लासिकल डांसर पद्मश्री डॉ. आनंदा शंकर जयंत, माइक्रोसॉफ्ट इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉर्पोरेट वाइस प्रेसिडेंट राजीव कुमार, भारतीय पैरा तैराक और 2018 के इंडियन ओपन पैरास्विमिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक विजेता मो. शम्स आलम शेख, पद्मश्री उद्धब कुमार भराली, 2015 के बेस्ट इंडियन शेफ ऑफ द ईयर व सेलेब्रिटी शेफ विकी रत्नानी, फेमिना मिस इंडिया 2018 की पहली रनरअप मीनाक्षी चौधरी उपस्थित रहे।

स्मृति ईरानी बोलीं-17 वर्ष की उम्र में ही मैंने जीवन का बड़ा निर्णय ले लिया

इस बार टेडएक्स की थीम सिक्के का तीसरा पक्ष (थर्ड साइड ऑफ द क्वाइन) रखा गया, जो जीवन के विशिष्टता और सुंदरता को दर्शाता है। आयोजकों के अनुसार सिक्के का तीसरा पहलू उन लोगों को दर्शाता है जो दूसरों से अलग काम करते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जीवन का बड़ा निर्णय मात्र 17 वर्ष की उम्र में लिया था, जो परिवार के परंपरागत रास्ते से अलग था। अपने विचारों को खुलकर रखने के बाद उन्हें आगे बढ़ने में काफी मदद मिली। अगर आप शांति से और सोचते-समझते हुए शुरुआत करते हैं तो स्वाभाविक है कि इसका प्रभाव गहरा होगा।

बाएं से- शैलेंद्र सिंह, मो. शम्स, विकी रत्नानी, राजीव, मीनाक्षी चौधरी, डॉ. आनंदा, उद्धब कुमार।

बड़ी सीख हमें असफलता से मिलती है : राजीव कुमार

माइक्रोसॉफ्ट इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉर्पोरेट वाइस प्रेसिडेंट राजीव कुमार ने अपने छोटे से गांव से लेकर माइक्रोसॉफ्ट तक की जर्नी के बारे में बताया। कहा कि लोग सफलता, असफलता की बात तो करते हैं लेकिन तीसरे साइड की बात नहीं करते, जो लर्निंग यानी सीख का होता है। मैंने हार और जीत भी देखी है और मैंने उससे सीखा है। हम सफलता और असफलता दोनों से सीख ले सकते हैं। पर हमें बड़ी सीख हमेशा असफलता से ही मिलती है।

दिव्यांगजनों के लिए सुगम इंफ्रास्ट्रक्चर हो : मो. शम्स

2018 की इंडियन ओपन पैरा स्विमिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक विजेता मो. शम्स आलम शेख ने कहा कि दिव्यांगजनों को अपने समाज का हिस्सा बनना है तो उनके लिए सुगम व सुलभ इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना होगा, ताकि हम अपना काम करने के लिए किसी भी जगह पर खुद जा सकें।

दिमाग को खुला छोड़ेंगे तभी इनोवेटिव होंगे : डॉ. आनंदा

इंडियन क्लासिकल डांसर डॉ. आनंदा शंकर जयंत ने कहा कि मुझे ब्रेस्ट कैंसर हुआ तो मैं हताश और गुस्सा थी। पति ने मेरा साथ दिया। मैंने निर्णय लिया कि मैं इससे परेशान नहीं होऊंगी। हमें अपने दिमाग को खुला छोड़ना है, ताकि इनोवेशन को बढ़ावा दे सकें। विशिष्टता पर ध्यान देंगे तो निडर बनेंगे।

Dainik Bhaskar, 12.12.2021, Pg. 04